॥ जय माता दी ॥

श्री ज़्येष्ठा देवी



ॐ सर्व मंगल मांगले शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये जयम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते॥

SRI ZEASHTA DEVI PRABANDHAK COMMITTEE
SRINAGAR (J& K)

आरती

ओम् जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता

तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुखदाता।। ओम् जय ज्येष्ठा माता

श्रद्धा भक्ति बढ़ाकर, तुम दारिद्र हरो

सकल काम प्रदायिनी, दुःख माँ दूर करो।। ओम् जय ज्येष्ठा माता

महा दैत्य संहारी, तू माँ दुर्गति हारी।

महामोह हटा दो, ज्येष्ठेश्वर प्यारी।। ओम् जय ज्येष्ठा माता

माता खप्पर धारी, मेरी विपदा सारी।

दूर करो हे माता, प्रिय भक्तन प्यारी।। ओम् जय ज्येष्ठा माता

अमृत कुंड विराजे, कमल हाथ में साजे।

करे हित सभी का, निर्धन या राजे।। ओम् जय ज्येष्ठा माता

झूठी माया सारी, हम को लगती प्यारी।

अविद्या दूर करो, हे पीताम्बर धारी ।। ओम् जय ज्येष्ठा माता

भक्ति बढ़ाने वाली, कोई युक्ति करो।

भयहारिणी माता तुम, भव भय सदा हरो।। ओम् जय ज्येष्ठा माता

हम अति दीन दुःखी माँ, तेरी आस खड़े।

जाने न विद्या कोई, तेरी शरण पड़े।। ओम् जय ज्येष्ठा माता

ओम् जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता

तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुखदाता।। ओम् जय ज्येष्ठा माता

INTRODUCTION

From ancient times India and particularly Kashmir has been the place where Rishis, Sages, Saints and poets from all over the world came and made their abode. The hermits, savants and ascetics, who were glorifying powers or enjoyment, chose to live in this valley secluded from rest of the world. The valley was in the beginning a vast mountain lake called Satisar (सतीसर) According to Nilamatpurana (नीलमत्पुराण) Kasyapasrsi (कश्यप–ऋषि) reclaimed the land by draining out the water from the lake. Hence the reclaimed land was called "Kasyapa-mar" (abode of Kasyaprsi) now Kashmir. Lord Siva has also appeared in may form in this sacred land to eradicate the sufferings of his devotees. Almost all the places of His appearance, in one form or the other, are situated around the banks of Dal lake like Harisvr (हरीश्वर) (now Harishwar) Srvesvr (स्वेश्वर) (now Sarishwar) Mahadev (महादेव) and Zyesthesvara (ज्येष्ठश्वर) (now Zeethyar). The Description of these pligrimage is available in Vitastamahatmya (वितस्तामाहात्म्य).

ORIGIN

Zeshta's origin relates to an important event which took place during the churning of great ocean called Ksirasagara (क्षीरसागर). Devtas and Asuras (देवता व असुर) both desirous of attaining in mortality were yearing for getting the nectar (अमृत) from Ksirasagara. At the same time they were conscious that this nectar would become available to them only if Lord Siva, who is holder and controller of Ksirasagara, permitted them to churn it. So both the parties, with great reverance, adored the Lord. Pleased with their adoration and devotion, Lord Siva gifted them the boon of churning Ksirasagar, of course, with the condition that whatever substance came out therefrom would be shared by both Devatas and Asuras equally.

Unaware of the nature of the substance that would come out after churning of the ocean, they gladly accepted the condition.

Having possessed Ksirasagara, no doubt, for a specific purpose of getting nectar, but both the parties puzzled, as they had no idea about the methodology that was to be used for its churning. So disappointed they again approached Lord Siva for betowing them with divine power which would make churning of the ocean possible. Lord Siva, the bestower of boons, gave them one more boon by revealing to approach: -

I) Mandara Parvata (मन्दार पर्वत), (the biggest mountain called (मन्दार पर्वत). That mountain alone could be used as a churner for Ksirasagra;

ii) Lord Narayana (भगवान नारायण) for taking Incarnation of Kurmadevta, a giant crocodile. He alone can hold this great mountain on his back; and

iii) Vasukinaga (वासुकी नागदेवता) for offering his body to be used as a rope around Mandara Parvata. That alone has the power to make Mandara Parvata the churner of Ksirasagara.

Feeling delighted and getting the help of Mandara Parvata, Narayana and Vasukinaga, the Devtas and Asuras started the process of churning. Although initially they got fourteen gems (रत्न) of which one gem was in the form of Goddess Laksmi (लक्ष्मी) but suddenly it started evaporating poison in the form of Kalakuta (कालकूट) or Halahala (हलाहल) the terrible poison having its lethal effect to destroy whole universe Instantneously. The Devas who were given the control over thirteen gems, too, were frightened about Kalakuta. Being of a very virulent character, the moment it appeared after churning, it started engulfing everything and burn it up. It was beyond their power to control it. They were desperate and adorded Lord Siva to come to their rescue. The Lord,

who is Trilokinatha (त्रिलोकीनाथ), protector of the universe, was pleased and bestowed His Anugraha to His creatioin by consuming the poison. But in order to protect Parvati (Lord Siva's energies), He stored it in His throat. That is the reason Lord Siva's throat in appearance is bluish. The Devas and Asuras were delighted and they again adored Lord Siva by addressing Him Nilakantha (नीलकण्ठ) (Literally the Lord with bluish Throat).

The Devas bestowed Goddess Lakshmi to Lord Visnu. This furiated the Asuras. In their anger they snatched her from Lord Visnu and kept her in captivity in a cave called "Guptagara" (now Gupkar). This action of Asuras gave rise to the wrath of Lord Siva and with His divine force he created Goddess Zestha (ज्येष्ठा) and Vira Vaitala (वीर वैताल) with powers to annihilate all the Asuras and free goddess Laksmi for their clutches. Upon accomplishing the task Lord Siva by His grace bestowed both of them with the power of protection and upliftment of mankind. All the devotees worshipping Goddess Zyestha (ज्येष्ठ) are fully protected and receive Mother's grace uninterruptedly i.e. in continuity. It has been a tradition to offer 'cooked yellowish rice' (in kashmir called तहर) on all thursdays during the month of Zyesth (ज्येष्ठ).

This famous ancient shrine of Kashmir for worldly people is a place for attaining Siddi (सिद्धी), Riddhi (ऋद्धि) and Buddhi (बुद्धि) in all the fields.

वक्तव्य

हमारे देश भारत और विशेषतः काश्मीर में प्राचीनकाल से ही ऋषि, मुनि साधु, सन्त और कवियों का समूह दूसरे देशों से आता रहा है। और यहां पर वास करता रहा है। काश्मीर मंडल उन साधुओं तथा सन्तों का घर रहा है जिनको सांसारिक मोह माया का कोई लोभ नहीं होता था। पहले यह मंडल एक बहुत बड़ा पर्वतीय सरोवर था। इसका नाम सतीसर था। कहते हैं कि इस सरोवर का पानी एक ऋषि जिसका नाम कश्यपऋषि था, ने अपने योगबल से निकाला था और इसी धरती के खंड का नाम कष्यपमरु अब काश्मीर कहलाता है। यह भी कहा जाता है कि भगवान शिव अपने भक्तों की यातनाओं और बाधाआ को दूर करने के लिये यहां पर अनेक रूपों में उत्पन्न हुए और अधिकतर यह जगहें झील डल के किनारे पर ही हैं जैसे कि हरीश्वर, सर्वेश्वर, महादेव और ज्येष्ठेश्वर (वर्तमान जीठयार)।

पौराणिक कथा एवम माहात्म्य

ज़्येश्ठा प्रादुर्भाव भी "श्रीसंहिता" की पौराणिक गाथा की एक महत्त्वपूर्ण कडी है, जिसका सम्बन्ध क्षीरसागर–मन्थन से है। जब देवताओं और असुरों ने क्षीरसागर मन्थन किया उस से चौदह रत्न निकले जिनमें माता लक्ष्मी और विष भी था। देवताओं ने तेरह पर अधिकार कर लिया, पर विष के बारे में सभी व्याकुल थे कि इसका क्या होगा? यह जानकर भगवान शंकर ने जगत् कल्यान के लिए वह विष स्वयं पी लिया जिसके कारण वे मृत्युञजय नीलकण्ठ कहलाये। देवताओं ने

भगवान विष्णु से आराधना की कि वह माता लक्ष्मी को स्वीकार करे। यह देखकर दानव बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने उनसे माता लक्ष्मी को छीन कर गोपादरी की गुफा से छिपाया जिस कारण यह स्थान गुप्तागार (वर्तमान गुपकार) के नाम से प्रसिद्ध है।

भगवान शिवजी ने अपने योग बल से दानवों द्वारा लक्ष्मी–हरण की घटना को जानकर असुर संहार के लिए माया शक्ति से ज्येष्ठा और वीर वैताल को उत्पन्न किया, साथ ही उन्हें यह वरदान भी दिया कि जो कोई भी भक्तजन इस स्थान पर आकर भक्ति–भाव से आराधना करे और पीले चावल (तहर) का भोग लगाये, उसकी सब कामनाएँ पूरी होंगी–विशेषतः ज्येष्ठ मास की सभी गुरुवारों (बृहस्पतिवारों) को।

यह माहात्म्य इस बात का साक्षी है कि यह तीर्थ प्राचीनकाल से काश्मीर का प्रमुख तीर्थ रहा है। यहाँ भक्तजनों की मनोकामनाएं तत्क्षण पूर्ण होती हैं, साथ ही सभी प्रकार के कष्ट दूर होते है। फलस्वरूप इस तीर्थ–राज का महत्व आज भी अक्षुण्ण तथा अवर्णनीय है।

यह तीर्थ सिद्धि, ऋद्धि तथा बुद्धि देने वाला है विशेषतः कलियुग में यह तत्क्षण मनोकामना पूर्ण करने वाला तथा इहलौकिक और पारलौकिक सुख देने वाला है।

ये तीर्थ राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं। यहां भक्त पूर्व, पश्चिम, दक्षिण तथा उत्तर से आते हैं। इन तीर्थों में आने से भक्तों को मानसिक षान्ति प्राप्त होती है और उन्हें आध्यात्मिकता की ओर रुचि बढ जाती है।

सचमुच तीर्थे का महत्त्व अलौकिक है। हमारे शास्त्रों में इनका विशेषरूप से वर्णन किया गया है। "वितस्ता–मालात्मय" का यह पद्य दृष्टान्त के रूप में दृष्टव्य है:–

प्रथिव्यां यानि तीर्थानि
तानि काश्मीर पण्डले।
काश्मीरे यानि तीर्थानि
तनि वैतस्तिके जले।।

अर्थात् – पश्थ्वी पर जितने भी तीर्थ हैं वे काश्मीर मंडल में है। काश्मीर में जितने भी तीर्थ हैं यह वितस्ता नदी के जल में हैं।

।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

ELECTION AUTHORITY
ZEASHTA DEVI PRABANDHAK COMMITTEE,
ZEATHYAR, RAJ BHAWAN MARG SRINAGAR.

NOTIFICATION

In pursuance to the directions of the Hon'ble High Court dated 12.02.2014 and duly endorsed by the Dy. Commissioner Srinagar dated 15.02.2014, the Elections for the constitution of Executive Body of Zeashta Devi Prabandhak Committee, Zeathyar stands concluded on 23.03.2014. In The Election barring President, all other contestants for the posts shown against each stands elected unopposed. For the the Post of President Sh. Bharat Bushan Bhat_defeated Dr. A.K.Koul by a margin of 107 votes. Accordingly The Executive Committee of Zeashta Devi Prabandakh Committee stands formally Constituted as under:-

President.	Bharat Bushan Bhat	94191 31543
Vice President:	Bushan Lal Saraf.	94194 06440
General Secretary.	Rakesh Koul.	94692 79851
Secretary:	Aneel Hashiya.	94191 31806
Publicity/ Organizing Secretary:	Ravinder Kumar Jogi	94191 21998
Treasurer:	Rakesh Raina.	94191 31804
Storekeeper/Accountant:	Ashwani Raina.	94191 31729

Executive Members:

1.	Ashok Kumar Jain	94190 09586
2.	Avinash Wangoo	94191 46214
3.	Deepak Moza	94191 24878
4	Dileep Kumar Razdan	94194 23661
5.	Kanwal Kr. Bhat	94197 95590
6.	M.K.Ganjoo	94191 33303
7.	Piaray Lal Pandita	94192 02981
8.	Rakesh Kumar Pandita	94196 14790
9.	Ramesh Khuda	94192 28110
10.	Ramesh Dhar	97964 39600
11.	Vimal jee	94191 95778

Dated: 23.03.2014

ELECTION AUTHORITIES
ZEASHTA DEVI PRABANDAK COMMITTEE.

VARSHIK YAGYA SAMMELAN


MATA MANDIR